IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय एवं सूफी दर्शन के परिपेक्षय में जायसी का पद्मावत

[1]राजकुमार, [2]डॉ. शक्तिदान चारण

रिसर्च स्कोलर[1] व शोध निर्देशक[2]

हिंदी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय, राजस्थान

हिन्दी साहित्य की शक्ति मार्गी शाखा के संत काव्य धारा व सूफी काव्य धारा में मलिक मोहम्मद जायसी का नाम सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य अपने आप में काफी समृद्ध है। भाव भाषा तथा अनेक प्रकार के रसों की प्रधानता तथा अलंकारयुक्त काव्य हिन्दी साहित्य को अन्य साहित्य से अलग ठहराता है।

मलिक मोहम्मद जायसी का जन्म उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले के जायस नगर में हुआ था। वे जायस नगर के रहने वाले थे इसलिए उनके नाम के आगे जायसी शब्द जुड़ गया। जायसी सूफी काव्य धारा में उनके जैसा कवि नहीं है। उनकी लेखनी का जादू उनके महाकाव्य पद्मावत में हमें देखने को मिलता है।

भाषा पर मजबूत पकड़ तथा शब्दों का सही जगह पर इस्तेमाल यह दोनों बातें हमें जायसी के महाकाव्य में देखने को मिलती है। जायसी द्वारा लिखित पद्मावत प्रेमाख्यानक परम्परा का सबसे प्रसिद्ध एवं सबसे महत्वपूर्ण महाकाव्य है। इसके अंतर्गत इस महाकाव्य में चित्तौड़ के राजा रत्नसेन तथा सिंघल की राजकुमारी पद्मावत के प्रेम, विवाह तथा विवाह के बाद के जीवन का वर्णन किया गया है। इस कथा का पूर्वाद्ध कल्पना प्रधान है जबकि उतरार्द्ध में ऐतिहासिक यह वह काव्य है जिसके अंतर्गत भारतीय आदर्श पूरी तरह देखने को मिलता है।

इस काव्य की रचना दोहा तथा चौपाई शैली में हुई है। जायसी ने इस महाकाव्य में लौकिक प्रेम के आधार पर आध्यात्मिक प्रेम को दर्शाया है। इसमें कवि की रहस्यवादी प्रवृति उभरकर सामने आई है। पद्मावत की शैली मसनवी है। इसकी भाषा ठेठ अवधी है। जायसी के पद्मावत में लोक संस्कृति का व्यापक तथा विशुद्ध चित्रण मिलता है।

प्रारंभ से अंत तक इस काव्य में लोक संस्कृति की आवाज सुनाई पड़ती है। सूफी काव्य परंपरा को लेकर विद्वानों में मतभेद है। भिन्न–भिन्न कवियों तथा लेखकों ने अपने–अपने मत के अनुसार सूफी काव्य का चयन किया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कुतुबन की मृगावती को सूफी काव्य परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना है। आचार्य हजारी द्विवेदी ने ईश्वर दास द्वारा रचित सत्यवती कथा को इस काव्य परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना है। इसके अलावा डॉ. राजकुमार वर्मा मुल्ला दाउद की चद्रायन को प्रथम सूफी ग्रंथ मानते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जायसी की तुलना अपने समय के सिद्ध फकीरों में करते हैं।

जायसी की तीन कृतियां हमें देखने को मिलती है–अखरावट, कान्हावत तथा पद्मावत लेकिन जायसी की प्रसिद्धि का आधार स्तंभ उनका महाकाव्य पद्मावत ही है। पद्मावत प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला एक विशुद्ध प्रबंध काव्य जायसी ने रचा। अखरावट में देवनगरी वर्णमाला के एक–एक अक्षर को लेकर सैद्धांतिक बातें बताई गई हैं।

इसके अलावा जायसी ने अपनी रचना आखिरी कलम में कयामत का वर्णन किया है। पद्मावत में हमें वियोग वर्णन तथा श्रृंगार वर्णन दोनों का चित्रण देखने को मिलता है।

जायसी ने जैसा नख–सिख वर्णन पद्मावत में किया है। वह पाठकों के हृदय को छू जाती है। जायसी ने मांसल प्रेम के स्थान पर भाव को प्रधानता दी है, जो मार्मिकता तथा भावों की अभिव्यंजना हमें पद्मावत के अंदर देखने को मिलती है। वैसी अभिव्यंजना शायद ही कहीं ओर मिले। हिन्दी साहित्य की भक्ति मार्गी काव्य धारा के अंतर्गत सूफी काव्य परंपरा में जायसी का नाम सर्वोच्च स्थान पर है। वे इसके प्रतिनिधि कवि कहे जाते हैं। पद्मावत के अंदर उन्होंने लैकिक से अलैकिक प्रेम का वर्णन भी इस महाकाव्य में बखूबी रूप से किया गया है।

पद्मावत को प्रतिकात्मक काव्य भी कहा गया है। मलिक मोहम्मद जायसी ने पद्मावत के प्रेम काव्य को पूरी तरह से भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा के साथ प्रस्तुत किया है। लेकिन इसकी जो पद्धति है वह सूफी पद्धति रही है।

निष्कर्ष –

यह कहा जाता सकता है कि मध्यकालिन हिन्दी साहित्य में सूफी कवियों के प्रेमाख्यानकों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन रचनाओं में एक और तो प्रेम के ऐसे लोकोत्तर स्वरूप की प्रतिष्ठा की जो ईश्वर तक ले जानलेवा है तो दूसरी ओर सहिष्णुता उदारता और भाईचारे का पाठ पढ़ाया है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. जायसी ग्रंथावली

2. वीकिपीडिया

3. अभिव्यक्ति डॉट कॉम

4. साहित्य दर्पण

5. ई–ज्ञानकोश

6. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल